INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VII- 2nd Lang	Department: Hindi	Date of submission:
प्रश्नोत्तर और व्याकरण	Topic: खानपान की बदलती तसवीर	Note: Pl write in your NB

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न1. उत्तर भारत में किसकी संस्कृति में बदलाव आया है?

उत्तर- उत्तर भारत में खान-पान की संस्कृति में बदलाव आया है।

प्रश्न2. खानपान की संस्कृति में बड़ा बदलाव कब से आया है?

उत्तर- खानपान की संस्कृति में बड़ा बदलाव दस-पंद्रह वर्षों से आया है|

प्रश्न3. मथुरा-आगरा के कौन-से व्यंजन प्रसिद्ध हैं?

उत्तर- मथुरा के पेड़े और आगरा के पेठे प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न4. आजकल बड़े शहरों में किसका प्रचलन बढ़ गया है?

उत्तर- आजकल बड़े शहरों में फ़ास्ट फूड (चाइनीज नूडल्स, बर्गर, पीजा) का प्रचलन तेज़ी से बढ़ा है।

प्रश्न5. खानपान की बदलती संस्कृति ने किसे अधिक प्रभावित किया है।

उत्तर- खानपान की बदलती संस्कृति ने नई पीढ़ी को अधिक प्रभावित किया है।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न1. स्थानीय व्यंजनों के प्रसार को प्रश्रय कैसे मिला?

उत्तर- आज़ादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों, तबादलों के कारण लोग एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाने लगे| इससे मिश्रित व्यंजन वाली संस्कृति का विकास हुआ। इसके कारण खानपान की चीज़ें एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं।

प्रश्न2. खानपान की संस्कृति का 'राष्ट्रीय एकता' में क्या योगदान है?

उत्तर- खानपान की संस्कृति का राष्ट्रीय एकता में महत्त्वपूर्ण योगदान है। खाने-पीने की चीज़ों का प्रभाव पूरे देश पर पड़ा है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत के व्यंजन दक्षिण व दक्षिण के व्यंजन उत्तर भारत में अब काफ़ी प्रचलित हैं। इससे लोगों में मेलजोल भी बढ़ा है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

प्रश्न3. स्थानीय व्यंजनों का पुनरुद्धार क्यों ज़रूरी है?

उत्तर- स्थानीय व्यंजन किसी न किसी स्थान विशेष से जुड़े हैं।वे हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। उनसे हमारी पहचान होती है। पश्चिमी प्रभाव के कारण भी हम अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं| इन सब कारणों से भारतीय व्यंजनों का पुनरुद्धार ज़रूरी है|

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1. खानपान में बदलाव के कौन-कौन से फ़ायदे हैं? लेखक इस बदलाव को लेकर चिंतित क्यों है?

उत्तर- खानपान में बदलाव से निम्नलिखित फ़ायदे हैं-

1. एक प्रदेश की संस्कृति का दूसरे प्रदेश की संस्कृति से मिलना।
2. राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलना।
3. गृहिणियों व कामकाज़ी महिलाओं को जल्दी तैयार होने वाले विविध व्यंजनों की विधियाँ उपलब्ध होना।
4. बच्चों व बड़ों को मनचाहा भोजन मिलना।
5. देश-विदेश के व्यंजन मालूम होना।

खानपान में बदलाव से होने वाले फ़ायदों के बावजूद लेखक चिंतित हैं क्योंकि उनका मानना है कि आज खानपान की मिश्रित संस्कृति को अपनाने से नुकसान भी हो रहे हैं जो इस प्रकार हैं-

1-स्थानीय व्यंजनों का चलन कम होने के कारण नई पीढ़ी स्थानीय व्यंजनों के बारे में जानती ही नहीं है|

2-खाद्य पदार्थों में शुद्धता की कमी होती जा रही है।

3-उत्तर भारत के व्यंजनों का स्वरूप बदलता ही जा रहा है।

प्रश्न 2. खानपान के मामले में स्थानीयता का क्या अर्थ है?

उत्तर-खानपान के मामले में स्थानीयता का अर्थ है- किसी विशेष स्थान के खाने-पीने का विशेष व्यंजन। जिसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक हो। मसलन मुंबई की पाव-भाजी, दिल्ली के छोले-कुलचे, मथुरा के पेड़े व आगरे के पेठे, नमकीन आदि। पहले हर प्रदेश में किसी न किसी विशेष स्थान का कोई-न-कोई व्यंजन प्रसिद्ध था लेकिन आज खानपान की मिश्रित संस्कृति की वजह से इतने विकल्प हैं कि स्थानीय व्यंजन प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं। दूसरी ओर महँगाई बढ़ने के कारण भी इन व्यंजनों की गुणवत्ता में कमी हुई है जिसके चलते लोगों की रूचि इनके प्रति कम हो गई है। हाँ, आजकल भले ही पाँच सितारा होटलों में इन्हें 'एथनिक' कहकर परोसा जाने लगा है।

&&&&&&&

लेखन कार्य – विज्ञापन-

प्रश्न-1 'बालों के तेल' के लिए आकर्षक विज्ञापन बनाइए|

प्रश्न-2 चित्र वर्णन – (1) (2)

खुश रहिए! स्वस्थ रहिए! मुस्कराते रहिए!